

पेननिसुलर रॉक 'अगम'

हाल ही में, भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc), बंगलुरु के शोधकर्त्ताओं द्वारा उन विभिन्न पर्यावरणीय कारकों (शहरीकरण सहित) को समझने के लिये एक अध्ययन किया गया है जो पेननिसुलर रॉक अगम/दक्षिण भारतीय अगम की उपस्थिति को प्रभावित कर सकते हैं।

पेननिसुलर रॉक अगम:



■ परचिय:

- पेननिसुलर रॉक अगम (वैज्ञानिक नाम— समोफलिस डॉरसालसि) एक प्रकार की उद्यान छपिकली है, जिसकी उपस्थितिदिक्षिणी भारत में मुख्य रूप से देखी जा सकती है।
- इस छपिकली का आकार अपेक्षाकृत रूप से बड़ा है, जो नारंगी और काले रंग की होती है।
- ये अपने शरीर से ऊष्मा उत्पन्न करने में सक्षम नहीं होती हैं, इसलिए इन्हें बाह्य स्रोतों जैसे सूर्य के प्रकाश से गर्म चट्टानों अथवा मैदानों से ऊष्मा प्राप्त करनी पड़ती है।

■ भूगोल:

- यह मुख्य रूप से भारत (एशिया) में पाई जाती है।
 - भारतीय राज्य तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, केरल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, बिहार छपिकली की बहुतायत आबादी देखी जाती है।

■ प्राकृतिक वास:

- यह प्रीकोशयिल प्रजाति के अंतर्गत आता है।
 - प्रीकोशयिल प्रजातियाँ वे हैं जिनमें जन्म के क्षण से ही अपेक्षाकृत परपिक्व और घूमने-फरिने में सक्षम होते हैं।

■ सुरक्षा की स्थिति:

- **IUCN रेड लिस्ट** : कम चिन्नीय
- **वन्य जीवों एवं वनस्पतियों की लुप्तपराय प्रजातियों के अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन** : लागू नहीं
- **वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972** : लागू नहीं

छपिकली के बारे में:

- रॉक अगम संकेत कर सकती है कि शहर के कौन से हिस्से गर्म हो रहे हैं और उनकी संख्या बताती है कि खाद्य जाल कैसे बदल रहा है।
 - छपिकलियों को बाहरी स्रोतों जैसे गर्म चट्टान या दीवार पर धूप वाले स्थान से गर्मी की तलाश होती है क्योंकि वे अपने शरीर से गर्मी उत्पन्न नहीं करती हैं।

- ये छपिकलरिँ कीडे खाती हैं तथा स्वयं रैप्टर, साँप और कुत्तों द्वारा खा ली जाती हैं, वे उन जगहों पर नहीं रह सकतीं जहाँ कीडे नहीं होते हैं।
 - कीडे स्वस्थ पारस्थितिकी तंत्र के महत्त्वपूर्ण घटक हैं क्योंकि वे परागण सहति कई सेवाएँ प्रदान करते हैं।
 - इसलिये रॉक अगमों की उपस्थिति पारस्थितिकी तंत्र के अन्य पहलुओं को समझने हेतु महत्त्वपूर्ण मॉडल प्रणाली प्रस्तुत करता है।

स्रोत: द द्रिष्टि

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/peninsular-rock-agama>

